RNI No. 26281/74 रजि. नं. पी.बी./जे.एल–011/2018-20

ओ३म्
कृण्वन्तो विश्वमार्यम्
साप्ताहिक

आर्य मर्यादा

आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब का प्रमुख पत्र

वर्ष: 75, अंक : 17 एक प्रति 2 : रुपये
रविवार 8 जुलाई, 2018
विक्रमी सम्वत् 2075, सृष्टि सम्वत् 1960853119
दयानन्दाब्द : 194 वार्षिक शुल्क : 100 रुपये
आजीवन शुल्क : 1000 रुपये
दूरभाष : 0181-2292926, 5062726
E-mail: apspunjab2010@gmail.com,
www.aryapratinidhisabha.org

वर्ष–75, अंक : 17, 5–8 जुलाई 2018 तदनुसार 24 आषाढ़ सम्वत् 2075 मूल्य 2 रु०, वार्षिक 100 रु० आजीवन 1000 रु०

JALANDHAR CITY R.M.S.

नौ द्वारों वाला पुण्डरीक (कमल)

ले०–स्वामी वेदानन्द (दयानन्द) तीर्थ

पुण्डरीकं नवद्वारं त्रिभिर्गुणेभिरावृतम्।
तस्मिन्यद्यक्षमात्मन्वत्तद्वै ब्रह्मविदो विदुः।।

–अथर्व० १०।८।४३

शब्दार्थ–**त्रिभिः** = तीन **गुणेभिः** = गुणों से **आवृतम्** = ढका हुआ **नवद्वारम्** = नौ द्वारों वाला **पुण्डरीकम्** = कमल है। **तस्मिन्** = उसमें **यत्** = जो **आत्मन्वत्** = आत्मावाला **यक्षम्** = पूजनीय है, **ब्रह्मविदः** = ब्रह्मवेत्ता **तत्** = उसको **वै** = ही **विदुः** = जानते हैं, प्राप्त करते हैं।

व्याख्या–मानस–(हृदय)–कमल को यहाँ एक गृह से उपमा दी है, तभी तो **'पुण्डरीकं नवद्वारम्'** कहा है। उपनिषत् में इस 'नवद्वार' विशेषण के कारण पुण्डरीक के साथ 'वेश्म' शब्द जोड़ दिया गया है, ताकि सन्देह ही न रहे। यथा–**'अथ यदिदमस्मिन् ब्रह्मपुरे दहरं पुण्डरीकं वेश्म'** (छां० ८।१।१) = इस ब्रह्मपुर में छोटा-सा कमल-समान जो मकान है, वह कमल-समान मकान **'त्रिभिर्गुणैरावृतम्'** तीन गुणों से घिरा है। सत्त्व, रजस् और तमस् इन तीन गुणों ने मन को घेर रखा है और वह नवद्वारं=नौ दरवाजों वाला है। 'इस नगरी के नौ दरवाजे' प्रसिद्ध हैं। **'तस्मिन्यद्यक्षमात्मन्वत्'** = उस कमल-समान मकान में आत्मासहित यक्ष=पूजनीय परमात्मा रहता है। छान्दोग्य (८।१।१) में कहा **'तस्मिन्यदन्तस्तदन्वेष्टव्यं तद्वाव विजिज्ञासितव्यम्'** = उसके भीतर जो है, उसकी खोज करनी चाहिए। वेद कहता है, उसमें **'आत्मन्वत् यक्ष'** है। वेद का आशय यह है कि हृदय-मन्दिर में आत्मा परमात्मा दोनों रहते हैं। उपनिषदों में भी अनेक स्थानों पर **'गुहां प्रविष्टौ'** = (हृदय-गुफा में प्रविष्ट हुए दोनों) शब्दों से यह अर्थ प्रतिध्वनित हुआ है।

अथर्ववेद (१०।२।३१-३२) में यही बात एक-दूसरे प्रसङ्ग में कही है–

अष्टाचक्रा नवद्वारा देवानां पूरयोध्या।
तस्यां हिण्ययः कोशः स्वर्गो ज्योतिषावृतः।।
तस्मिन् हिरण्यये कोशे त्र्यरे त्रिप्रतिष्ठिते।
तस्मिन् यद् यक्षमात्मन्वत् तद्वै ब्रह्मविदो विदुः।।

देवों की न जीती जा सकने वाली नगरी के आठ चक्र तथा नौ द्वार हैं। उस नगरी में प्रकाश से घिरा हुआ आनन्द तक ले-जाने वाला सुवर्णमय कोष है। उस तीन अरों वाले, तीन के सहारे रहने वाले सुवर्णमय कोश में आत्मन्वान् जो यक्ष है, ब्रह्मवेत्ता उसे ही प्राप्त करते हैं। मूलाधार से लेकर ब्रह्मरन्ध्र तक इस शरीर में आठ चक्र हैं। उत्थान के समय प्राण कभी-कभी इनमें रुका करता है। आँख-कानादि नौ द्वार प्रसिद्ध हैं। इस शरीर में हिरण्यय कोश है, मानस-मन्दिर कह लीजिए, दहर, पुण्डरीक, वेश्म कह लीजिए। सत्त्व, रजस् और तमस् इनके तीन अरे हैं। उस मानस-मन्दिर में आत्मा-परमात्मा का वास है, अतः वह प्रकाशमय है। आनन्दमय परमात्मा का वास स्थान होने से वह स्वर्ग=स्वर्+ग = आनन्द तक ले-जाने वाला है। ब्रह्मवेत्ता लोग उसी यक्ष को पाते हैं।

(स्वाध्याय संदोह से साभार)

तद्विप्रासो विपन्यवो जागृवांसः समिन्धते।
विष्णोर्यत् परमं पदम्।।

–ऋ० १.२२,२१

भावार्थ–उस सर्वव्यापक विष्णु भगवान् के सर्वोत्तम स्वरूप को, ऐसे विद्वान् ज्ञानी महात्मा सन्तजन ही जानकर, प्राप्त हो सकते हैं, जो संसारी पुरुषों से भिन्न हैं और जागरणशील हैं, अर्थात् अज्ञान, संशय, भ्रम, आलस्यादि नींद से रहित हैं। सदा उद्यमी, वेदादि सद्विद्याओं के अभ्यासी, ज्ञान ध्यान में तत्पर, संसार के विषय भोगों से उपरत, काम, क्रोधादि दोषों से रहित और शान्त हृदय हैं, जिनके सत्संग और सहवास से ज्ञान, ध्यान, प्रभुभक्ति और शान्ति आदि प्राप्त हो सकें, ऐसे महात्माओं का ही मुमुक्षु जनों को सत्संग और सेवा करनी चाहिए, जिससे पुरुष का लोक और परलोक सुधरे।

विष्णोः कर्माणि पश्यत यतो व्रतानि पस्पशे।
इन्द्रस्य युज्यः सखा।।

–ऋ० १.२२.१९

भावार्थ–हे मनुष्यों! आप लोग उस सर्वव्यापक जगत्पिता के, जगन्निर्माणादि आश्चर्य कर्मों को देखो और विचारों, जो उसने अपने प्रिय पुत्रों के लिए अवश्य कर्तव्य रूप से नियम निश्चित किए हैं उनको देखो, क्योंकि इन्द्रियों के स्वामी जीव का एक वही योग्य मित्र है। वह दयामय प्रभु जीवात्मा के हित के लिए अनेक अद्भुत कर्म कर रहा है। उसकी अपार कृपा है।

ऋजुनीती नो वरुणो मित्रो नयतु विद्वान्।
अर्यमा देवैः सजोषाः।।

–ऋ० १.९०.१

भावार्थ–हे महाराजाधिराज परमात्मन्! आप हमको सरल शुद्ध नीति प्राप्त करायें। आप सर्वोत्कृष्ट हैं, हमें श्रेष्ठ विद्या और श्रेष्ठ धनादि प्रदान करके उत्तम बनाएँ। आप सबके मित्र हैं हमें भी सबका शुभचिन्तक बनाएँ। आप महाविद्वान् हैं हमें भी विद्वान् बनाएँ, आप न्यायकारी हैं, हमें भी धर्मानुसार न्याय करने वाला बनाएँ, जिससे हम विद्वानों और दिव्य गुणों के साथ प्रीति करने वाले होकर आपकी आज्ञा का पालन कर सकें। भगवन्! आप हमारी सदा सहायता करते रहें, जिससे हम सुनीतियुक्त होकर सुख से अपना जीवन व्यतीत कर सकें।

राजा सब दिशाओं को कल्याणकारी बनावे

ले.-अशोक आर्य १०४ शिप्रा अपार्टमेन्ट, कौशाम्बी २०१०१० गाजियाबाद

जिस प्रकार ऋग्वेद और यजुर्वेद में किसी भी देश के राजा के लिए निर्वाचित होना आवश्यक बताया गया है, उस प्रकार ही अथर्ववेद के बहुत से मन्त्र भी राजा के निर्वाचन का आदेश देते हुए कहते हैं कि राजा का निर्वाचन प्रजा द्वारा होगा तो ही राजा प्रजा के लिए उत्तरदायी होगा तथा प्रजा के हित के लिए काम करेगा। अथर्ववेद के तृतीय काण्ड के चतुर्थ सूक्त के तीन, चार तथा पांच मन्त्रों में इस सम्बन्ध में विशेष रूप से उल्लेख किया गया है। पाश्चात्य विद्वानों ने भी इस तथ्य को स्वीकार किया है कि किसी भी देश के राजा के चुनाव के समय इन मन्त्रों का पाठ अवश्य ही किया जाना चाहिए। ब्लूमफील्ड ने तो इस सम्बन्ध में जो भाव व्यक्त किये हैं उसका शीर्षक दिया है "Prayer at the election of a King" इस का भाव है कि 'राजा के चुनाव के समय की प्रार्थना' इस प्रार्थना के अंतर्गत अथर्ववेद के तृतीय काण्ड के चतुर्थ सूक्त के मन्त्र संख्या १. मन्त्र संख्या २. तथा मन्त्र संख्या तीन में बड़ा ही सुन्दर उपदेश किया गया है जो इस प्रकार है :-

आ त्वा गन् राष्ट्र वर्चसोदिही-प्राङ्विशां पतिरेकराट् त्वं वि राज।
सर्वास्त्वा राजन् प्रदिशो ह्वयन्तूप-सद्यो नमस्यो भवेह।।
अथर्ववेद ३.४.१।।

राजा का चुनाव करते समय जिन मन्त्रों का गायन है उन में से यह प्रथम मन्त्र उपदेश करते हुए कह रहा है कि हे राजन्! परमपिता परमात्मा की असीम कृपा से, उस प्रभु की अपार दया के परिणाम स्वरूप आज तुझे यह राजा का पद प्राप्त हो रहा है। भाव यह है कि मन्त्र उपदेश कर रहा है कि देश की प्रजा ने तुझे आज राजा के रूप में चुना है और इसलिए चुना है क्योंकि तेरे अन्दर अत्यधिक तेज है। यह तेज ही तेरे अभ्युदय का कारण है। यह तेज ही तेरे लिए उन्नति का कारण है।

इस तेज को देख कर ही प्रजा ने तुझे राजा के रूप में चुना है। यदि यह तेज तेरे अन्दर न होता तो तेरी प्रजा तुझे कभी न चुनती। इससे भी यह बात सिद्ध होती है कि तेरे राजा बनाने का कारण तेरे अन्दर की तेजस्विता है। तेरी यह तेजस्वी शक्ति जनता के कल्याण के लिए है। तेरी जन कल्याण की भावना के लिए जो तेज चाहिए, जो शक्ति चाहिए, उस तेज को, उस शक्ति को देख कर ही प्रजा ने तुझे सिंहासनारूढ़ किया है ताकि तू जन कल्याण के लिए पुरुषार्थ कर सके। तेरी प्रजा को तेरे से बहुत सी आशाएं हैं। इसलिए ही तुझे चुना गया है ताकि वह उनकी आशाओं को, उनकी आकांक्षाओं को पूर्ण कर सके।

प्रजा चाहती है कि तू उनका स्वामी बनाकर, प्रजा का रक्षक बनकर, प्रजा का मालिक बनकर, प्रजा का हितैषी बनकर, प्रजा का कल्याण करने वाला बनकर आगे आ। इस प्रकार प्रजा का प्रमुख स्वामी बनकर इस सिंहासन पर तुम विराज-मान हो। इस प्रकार राजा के लिए मन्त्र ने स्पष्ट आदेश व सन्देश दिया है कि तुझे तेरी प्रजा ने इसलिए चुना है क्योंकि तेरे अन्दर विशेष प्रकार की शक्तियों को देखते हुए प्रजा ने तुझे यह आधिपत्य दिया है और प्रजाओं ने तुझे अपना प्रमुख स्वामी बनाते हुए तुझे यह सत्ता सौंपी है किन्तु तू कभी भी अपने आप को प्रजा का प्रमुख स्वामी न मानकर प्रजा का प्रमुख सेवक बनना और सदा जन सेवा की भावना को ही अपने अन्दर बनाए रखना।

प्रजा के द्वारा तुझे चुने जाने पर तू प्रजा का इतना हित कर, उनके हित के लिए इतने अधिक हितकारी कार्यकर ताकि तेरी ख्याति, तेरे उत्तम कार्यों के कारण तेरे नाम की चर्चा सब दिशाओं में हो। दिशाएं चार मानी गई है किन्तु ऊपर नीचे तथा बीच की दिशाओं को भी जब हम गिनती में लावें तो दिशाएं अनेक हो जाती है। मन्त्र कहता है कि सब दिशाएं तथा सब उप दिशाएं तुझे पुकारें। इसका भाव यह है कि तेरे देश की सब दिशाओं से लोग अपने संकटों को दूर करने के लिए अपने स्वामी स्वरूप सदा तुझे स्मरण करें, तुझे याद करें, तुझे पुकारें। अपनी सब समस्याओं का समाधान पाने के लिए अपनी सब समस्याओं को तेरे सामने रखे।

जब तेरी जनता अपनी समस्याओं को तेरे सामने रखने के लिए तेरे पास आती है तो तू उनकी समस्याओं को बड़े ध्यान से सुनना और उन की समस्याओं को सुनकर, उनके समाधान के लिए प्रयास करना। जनता इसके लिए ही तुझे पुकारती है। उनकी पुकार को सुनते रहना तथा उन्हें समाधान देते रहना। प्रजा को प्रसन्न करने का यह ही एक मात्र साधन होता है।

मन्त्र कहता है कि इसी प्रकार सब दिशाओं की प्रजा सदा तुझे पुकारती रहे। केवल पुकारती ही न रहे बल्कि वह अपने सुखों की प्राप्ति के लिए तेरे पास आवें भी। इस प्रकार जब तू प्रजा के हित के कार्य करता है तो देश भर की जनता अपने कल्याण के लिए तेरे पास सदा ही आती रहेगी तथा वह तुझे अभिवादन के योग्य समझते हुए तुझे नमस्ते के योग्य मानते हुए तेरा अभिवादन करेगी, तुझे नमस्ते करेगी।

अथर्ववेद में राजा के चुनाव के समय तीन मन्त्रों के गायन का विधान किया गया है। इन तीन मन्त्रों में राजा के गुणों की परख करते हुए राजा के कार्यों तथा प्रजा के कर्तव्यों का बड़ा ही सुन्दर उपदेश किया गया है। यह वर्णन अथर्ववेद के तृतीय काण्ड के चतुर्थ सूक्त के मन्त्र संख्या १,२ तथा मन्त्र संख्या ६ में दिया गया है। प्रथम मन्त्र की व्याख्या के पश्चात अब हम दूसरे मन्त्र को हाथ में लेते हुए बताते हैं कि यह मन्त्र हमें किस प्रकार से उपदेश कर रहा है :

त्वां विशो वृणतां राज्याय त्वामिमाः प्रदिशः पञ्च देवीः।
वर्ष्मन् राष्ट्रस्य ककुदि श्रयस्व ततो न उग्रो वि भजा वसूनि
।। अथर्ववेद ३.४.२।।

प्रथम मन्त्र की ही भान्ति इस मन्त्र में भी लगभग वही उपदेश किया गया है। मन्त्र कह रहा है कि हे राजन्! चुनाव का समय है। तेरी प्रजा राजा के चुनाव के लिए मतदान करने जा रही है। वह उसका ही चुनाव करेगी, जो वीर होगा, वह उसका ही चुनाव करेगी, जो बुद्धिमान होगा, वह उसका ही चुनाव करेगी, जो उच्च शिक्षित होगा, वह उसका ही चुनाव करेगी, जिस ने कभी युद्ध में पराजित होना न सीखा हो अपितु शत्रु से अपने उत्तम शस्त्रों के द्वारा बात करते हुए शत्रु को डराने की क्षमता रखता हो, वह उसे ही अपना राजा बनावेगी जो अपनी प्रजा से प्रेम करता हो, वह उसे ही चुनेगी, जिसे जनकल्याण, प्रजा के हित के कार्य करने में आनंद आता हो, वह उसे ही चुनेगी जो गुणों की खान हो और अपने इन गुणों को बांटने के लिए सदा अग्रणी रहता हो। यदि तू राजा बनाना चाहता है, यदि तू चाहता है कि [प्रजा तुझे राज्याधिकार दे तो निश्चय ही तुझे अपने अन्दर के इन गुणों का प्रदर्शन करना होगा।]

इन सब तथ्यों को सामने रखते हुए मन्त्र राज्याधिकार करने की इच्छा रखने वाले प्रत्याशियों को उपदेश करते हुए इस मन्त्र के माध्यम से कह रहा है कि हे राजा बनाने के लिए सामने आये प्रत्याशी। हे विधायक बनाने के लिए चुनाव में उतर रहे प्रत्याशी। हे संसद के चुनाव में उतर रहे प्रत्याशी। तुम अपने आप को इस पद के योग्य मान कर इस चुनाव के लिए उतारा है किन्तु क्या तूने आत्मावलोकन किया है, क्या तूने जनता की दृष्टि से अपने आप को परखा है, जांचा है, क्या तूने कभी जनता से अपना प्रेम प्रकट किया है?, क्या तूने कभी किसी की संकट के समय सहायता की है?, क्या तूने कभी सड़क पर दुर्घटना के कारण रोते बिलखते किसी नागरिक को अस्पताल पहुंचाने का कार्य किया है ? क्या तूने कभी अपनी कक्षा के कमजोर विद्यार्थी को अपना पाठ स्मरण करने में कभी सहायता की है ? क्या तूने कभी किसी दुष्ट के आक्रमण के समय उसे बचाने का प्रयास किया है? क्या तूने कभी किसी असहाय, अपंग को सड़क पार करते समय उसकी सहायता की है ? यदि इस प्रकार के जनहितकारी कार्य तूने कभी किये ही नहीं तो जनता तुझ पर अपना विश्वास कैसे व्यक्त कर सकती है? तुझे अपना शासक कैसे नियुक्त कर सकती है? कभी नहीं। हाँ यदि तेरी इस प्रकार के जनहितकारी कार्यों में रूचि रही है, इसी प्रकार के लोगों की कभी सहायता की है तो निश्चय ही प्रजा तुझे अपने सर आँखों पर बिठावेगी और राजा का चुनाव करते समय अपना मतदान तेरे पक्ष में ही करेगी।

इसलिए मन्त्र कह रहा है कि हे शासक अथवा विधायक बनने की इच्छा रखने वाले प्रत्याशी। यदि तू किसी भी रूप में किसी भी प्रकार सत्ता पाना चाहता है तो निश्चय ही इस प्रकार के कार्य कर कि जिन कार्यों के कारण प्रजा तुझ से प्रसन्न हो तथा मतदान करते समय तेरे पक्ष में मतदान करते हुए तुझे इस पद के

(शेष पृष्ठ 6 पर)

सम्पादकीय

वेदों में पर्यावरण का संरक्षण

आज विश्व का सर्वाधिक चर्चित और चिन्तनीय विषय पर्यावरण है। पर्यावरण प्रदूषण विश्व की प्रमुख समस्या है। पर्यावरण के घटक तत्व हैं वायु, जल, भूमि, वृक्ष-वनस्पतियाँ। अथर्ववेद में सर्वप्रथम जल-वायु के अतिरिक्त ओषधियों या वृक्ष वनस्पतियों को पर्यावरण का घटक तत्व बताया गया है। वेद में इन तत्वों को छन्दस् कहा गया है। छन्दस् का अर्थ है- आवरक या पर्यावरण। अथर्ववेद का कथन है कि जल-वायु और वृक्ष वनस्पति ये पर्यावरण के घटक तत्व हैं और ये प्रत्येक लोक में जीवनी शक्ति के लिए अनिवार्य हैं, यदि ये नहीं होंगे तो मानव का जीवित रहना सम्भव नहीं है। इन तत्वों के प्रदूषण या विनाश से पर्यावरण प्रदूषण होता है। आज विश्वभर में भूमि, जलवायु आदि सबको अत्यधिक मात्रा में प्रदूषित किया जा रहा है। यांत्रिक उपकरण इस समस्या को और बढ़ा रहे हैं। जीवनी शक्ति प्राणतत्व या आक्सीजन के एकमात्र स्रोत वृक्ष वनस्पतियों को निर्दयतापूर्वक काटा जा रहा है। यदि वृक्ष नहीं होंगे तो मनुष्य को ऑक्सीजन नहीं मिल पाएगा और वह जीवित नहीं रह सकेगा। वैदिक ऋषियों ने पर्यावरण प्रदूषण को रोकने के लिए जलवायु और वृक्ष वनस्पतियों को प्रमुख साधन बताया है।

वायु संरक्षण- वेदों में वायु प्रदूषण, जल प्रदूषण, द्यु-भू अर्थात् भूमि और द्युलोक के संरक्षण की बात अनेक मन्त्रों में कही गई है। साथ ही वृक्ष वनस्पतियों के संरक्षण का आदेश दिया गया है। वेदों में वायु को अमृत कहा गया है। वायु जीवनीशक्ति देता है। इसको भेषज या ओषधि कहा गया है। यह प्राणशक्ति देता है और अपानशक्ति के द्वारा सभी दोषों को बाहर निकालता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि हम ऐसा कोई काम न करें, जिससे वायुरूपी अमृत की कमी हो। यदि हम प्राणवायु को कम करते हैं तो अपने लिए मृत्यु का संकट तैयार करते हैं। ऋग्वेद में मन्त्र आया है कि-

वात आ वातु भेषजं शंभु मयोभु नो हृदे।
प्रण आयूँषि तारिषत्।।
उत वात पितासि न उत भ्रातोत नः सखा।
स नो जीवातवे कृधि।।
यददो वात ते गृहे अमृतस्य निधिर्हितः।
ततो नो देहि जीवसे।।

अर्थात् वायु हमारे हृदय के स्वास्थ्य के लिए कल्याणकारक आरोग्य कर ओषधि को प्राप्त कराता है और हमारी आयु को बढ़ाता है। यह वायु हमारा पितृवत् पालक, बन्धुवत् धारक, पोषक और मित्रवत् सुखकर्ता है और हमें जीवन वाला करता है। इस वायु के घर अन्तरिक्ष में जो अमरता का निक्षेप भगवान द्वारा स्थापित है, उससे यह वायु हमारे जीवन के लिए जीवनतत्त्व प्रदान करता है। अथर्ववेद में मन्त्र आया है कि-

आ वात वाहि भेषजं वि वात वाहि यद् रपः।
त्वं हि विश्वभेषज देवानां दूत ईयसे

अर्थात् वायु के संचार से शरीर का मल निकलकर स्वास्थ्य मिलता है और तार, विमान, ताप , वृष्टि आदि का संचार होता है।

द्यु-भू संरक्षण- द्यु में सूर्य और अन्तरिक्ष आते हैं तथा भू में भूमि या पृथिवी। सूर्य ऊर्जा का स्रोत है, अंतरिक्ष वृष्टि करता है और पृथिवी ऊर्जा और वृष्टि का उपयोग करके मानवमात्र को अन्नादि देकर मानव जीवन को संचालित करती है। इस प्रकार द्यु- अन्तरिक्ष और भू ये तीनों परस्पर सम्बद्ध हैं। पृथिवी जल अग्नि या सूर्य समन्वित रूप में मानव जीवन का संचालन कर रहे हैं। यह संतुलन जब बिगडता है, तब विनाश की प्रक्रिया शुरू होती है। अतः वेदों में इनके संतुलन को सुरक्षित रखने के लिए आदेश दिए गए हैं। अनेक मन्त्रों में कहा गया है कि द्युलोक, अन्तरिक्ष और भूलोक को सभी प्रकार के प्रदूषणों से बचावें। अथर्ववेद में विशेष रूप से कहा गया है कि भूमि के मर्मस्थानों को क्षति न पहुँचावे। ऐसा करने से जल के स्रोत आदि नष्ट होते हैं और भू-स्खलन तथा भूकंप आदि की संभावना बढ़ती है।

जल संरक्षण- वेदों में जल की उपयोगिता और उसके महत्व पर बहुत बल दिया है। जल जीवन है, अमृत है, भेषज है, रोगनाशक है और आयुवर्धक है। जल को दूषित करना पाप माना गया है। जल के विषय में कहा गया है कि जल से सभी रोग नष्ट होते हैं। जल सर्वोत्तम वैद्य है। जल हृदय के रोगों को भी दूर करता है। जल को ईश्वरीय वरदान माना गया है। अनेक मन्त्रों में जल को दूषित न करने का आदेश दिया गया है। जल और वृक्ष वनस्पतियों को कभी हानि न पहुँचावें। पुराणों में तो यहाँ तक कहा गया है कि नदी के किनारे या नदी में जो थूकता है, मूत्र करता है या शौच आदि करता है, वह नरक में जाता है और उसे ब्रह्म हत्या का पाप लगता है। ऋग्वेद में कहा गया है कि-

अप्स्वन्तरमृततप्सु भेषजमपामुत प्रशस्तये।
देवा भवत वाजिनः।।

महर्षि दयानन्द सरस्वती जी इस मन्त्र का भाष्य करते हुए लिखते हैं कि हे विद्वानों! तुम अपनी उत्तमता के लिए जलों के भीतर जो मार ड़ालने वाला, रोग का निवारण करने वाला अमृतरूप रस तथा जलों में औषध हैं उनको जानकर उन जलों की क्रियाकुशलता से उत्तम श्रेष्ठ ज्ञान वाले हो जाओ। यजुर्वेद के छठें अध्याय के 22वें मन्त्र में कहा गया है कि मापो हिंसीः अर्थात् जल को नष्ट मत करो।

वृक्ष वनस्पति संरक्षण- वेदों और ब्राह्मण ग्रन्थों में वृक्ष वनस्पतियों का बहुत ही महत्त्व वर्णन किया गया है। वृक्ष वनस्पति मनुष्य को जीवनी शक्ति देते हैं और उसका रक्षण करते हैं। ओषधियाँ प्रदूषण को नष्ट करने का प्रमुख साधन हैं। इसलिए उन्हें विषदूषणी कहा गया है। वेद में वृक्षों को पशुपति या शिव कहा गया है। ये संसार के विष कार्बनडाईआक्साईड को पीते हैं और इस प्रकार ये शिव के तुल्य विषपान करती हैं और प्राणवायु या ऑक्सीजनरूपी अमृत देती हैं। अतः वृक्षों को शिव का मूर्तरूप समझना चाहिए। इसी आधार पर ऋग्वेद में वृक्षों को लगाने का आदेश है। ये जल के स्रोतों की रक्षा करते हैं। एक मन्त्र में कहा गया है कि वृक्ष प्रदूषण को नष्ट करते हैं, अतः उनकी रक्षा करनी चाहिए।

इस प्रकार पर्यावरण की समस्या को खत्म करने के लिए हमें वैदिक चिन्तन को आधार बनाना होगा। वेदों के अनुसार यदि हम वनस्पतियों, ओषधियों, वृक्षों तथा जल और वायु का संरक्षण करते हैं तो इस समस्या से छुटकारा पाया जा सकता है। इनका संरक्षण न होने के कारण ही आज प्रदूषण की समस्या फैलती जा रही है, जल दूषित हो रहा है, शुद्ध वायु नहीं मिल रही है जिससे अनेक प्रकार की बीमारियां बढती जा रही हैं।

प्रेम भारद्वाज
संपादक एवं सभा महामन्त्री

आर्य मर्यादा साप्ताहिक पढ़ें और दूसरों को पढ़ाएं तथा लाभ उठाएं।

'सत्यार्थ प्रकाश' में सदाचार का सन्दर्भ

ले.-डा. निर्मल कौशिक कर्मशीला संस्कृत विकास मंच, फरीदकोट

इस संसार में मनुष्य ही सब जीवों में श्रेष्ठ माना गया है। मनुष्य ही अपने विवेक के कारण सभी जीवों में विकास के पथ पर आगे बढ़ा है। सामाजिक प्राणी होने के नाते सभ्यता और संस्कृति के माध्यम से उसने अनैतिक और अनैतिक बातों की पहचान करना सीख लिया है। ग्रन्थों में कहा गया है कि मानव जीवन अमूल्य है। अनेक योनियों के पश्चात् यह दुर्लभ मानव शरीर प्राप्त होता है। तुलसी दास जी कहते हैं-

बड़े भाग मानुष तनु पावा
सुर दुर्लभ सब ग्रन्थहि गावा।

यह मानव शरीर देवताओं को भी दुर्लभ है। अन्य प्राणियों में सभी क्रियाएँ जैसे खाना, पीना, सोना, मैथुन आदि क्रियाएँ तो समाज है लेकिन विवेकशील होने के कारण मनुष्य इन प्राणियों से अधिक विकसित हो गया है। संस्कृत के किसी विद्वान ने ठीक ही कहा है विवेक के कारण ही मनुष्य अन्य जीवों से श्रेष्ठ है। आहार निद्रा भय मैथुनं च सामान्यमेतद् पशुभि: नराणां विवेको हि तेषामधिको विशेषो विवेक हीना: पशुभि: समाना अब प्रश्न यह पैदा होता है कि क्या सभी मनुष्य सभ्य अथवा विवेकशील होते हैं? उत्तर है नहीं। कुछ मनुष्य का शरीर होते हुए भी पशुवत् व्यवहार करते है। वे असभ्य कहलाते है। वे दूसरे पर अत्याचार करते है। दुष्कर्म कहते हैं। मन, वचन और कर्म से दूसरों को आहत करते हैं और दूसरों का सुख और चैन छीन लेते है। ऐसे मनुष्य सभ्य समाज में रहने लायक नहीं है। अच्छा मानव बनने के लिए मानवीय गुणों का होना आवश्यक है। मानवीय गुण नैतिकता पर आधारित होते हैं। इन्हें सद्गुण भी कहा जाता है। इसी से मानव का आचरण और व्यवहार बनता है। अच्छे व्यवहार और आचरण के कारण ही मनुष्य सभ्य कहलाता है और समाज में आदर पाता है। ऐसे मनुष्य में विनम्रता मधुरता, सहयोग, दया, त्याग, प्रेम आदि गुण स्वत: आ जाते है। मनुष्य की वाणी और व्यवहार ही उसकी पहचान कराते है कि मनुष्य कितना सभ्य है। दूसरे शब्दों में इसे शिष्टाचार अथवा सदाचार भी कहा जाता है। इसके विपरीत आचरण करने वाला दुराचारी अथवा अनाचारी कहलाता है। सदाचारी मानव का स्वरूप जानने के लिए हम स्वामी दयानन्द जी के लोकप्रिय ग्रन्थ 'सत्यार्थ प्रकाश' के 'दशम समुल्लास' के आधार पर चर्चा करेंगे।

स्वामी दयानन्द जी ने सदाचार और अनाचार पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा है कि शुभ सत्कर्म और उत्तम कर्म ही सदाचार है और इसके विपरीत दुष्ट और बुरा कर्म (दुष्कर्म) ही अनाचार है। उनका कथन है कि वेद शास्त्र के अनुकूल सद् आचरण ही सदाचार है और इसके विपरीत आचरण अनाचार है। सदाचार से मन में प्रसन्नता और उत्साह मिलता है और अनाचार से मन में भय, शंका और लज्जा की अनुभूति होती है।

सदाचारी मनुष्य अपने जीवन में सत्कर्म करके समाज में सम्मान का अधिकारी होता है तथा समाज में प्रतिष्ठा का पात्र बनता है एवं उसका यशोगान होता है। स्वामी जी ने मन की स्वच्छता को सदाचारी मनुष्य के लिए आवश्यक माना है। सदाचारी मनुष्य कभी किसी के लिए बुरा नहीं सोचता है और न ही बुरा करता है।

जहां तक सम्भव हो वह हर किसी का भला ही सोचता है और भला ही करता है। सदाचारी मनुष्य के लिए उन्होंने तन की स्वच्छता (स्नानादि) स्वच्छ वस्त्रधारण, शुद्ध खानपान और बड़ों का सम्मान आवश्यक माना है। सदाचारी मनुष्य के लिए उन्होंने संस्कारों का होना आवश्यक माना है। लेखन अधिकारों से मनुष्य का शुद्धिकरण होता है। संस्कार का अर्थ है। परिष्कार, शोधन, शुद्ध अथवा पवित्र करना। स्वामी जी ने कहा है कि ब्राह्मण, क्षत्रिय, और वैश्य अपनी सन्तानों का गर्भाधान आदि संस्कार अवश्य करे। सदाचारी मनुष्य के लिए इन्द्रिय निग्रह अर्थात् अपनी इन्द्रियों को वश में करना आवश्यक है। सत्यार्थ प्रकाश में स्वामी जी लिखते है विद्वानों द्वारा राग द्वेष रहित सेवन करे अर्थात् आत्मा से सत्य कर्त्तव्य जाने वह आचरण अनुकरणीय है।

'विद्वभि: सेवित: सद्भि: नित्यमद्वेषरागभि:
हृदयेनाभ्यनुज्ञातो यो धर्मस्तन्निबोधत।।१।।'

अर्थात् मनुष्यों को सदा इस बात पर ध्यान देना चाहिए कि जिसका सेवन राग द्वेष रहित विद्वान् लोग नित्य करें। जिसको हृदय अर्थात् आत्मा से सत्य कर्त्तव्य जाने वही धर्म माननीय और अनुकरणीय है।

स्वामी जी ने वेदों, स्मृतियों, शास्त्र ग्रन्थों सज्जन पुरुषों के व्यवहार, व आप्त वाक्यों को सदाचार की बातें बताने वाले कहा है। जिस कर्म को करने में प्रसन्नता प्राप्त हो और भय, लज्जा शंका न हो वहीं सदाचार अथवा सत्कर्म है। मिथ्या भाषण, चोरी आदि करना दुष्कर्म है।

वेदोऽखिलो धर्म मूलम् स्मृतिशीले च तद्विदाम।
आचारश्चैव साधुनामात्मनस्तुष्टिरेव च।।५।।

अर्थात् सम्पूर्ण वेद, मनुस्मृति, ऋषि प्रवीत शास्त्र, सत्पुरुषों को आचार और जिस कर्म में अपना आत्मा प्रसन्न रहे (अर्थात् भय, शंका, लज्जा आदि जिसमें न हो) उन कर्मों को करना उचित है। क्योंकि वेद ही सब धर्मों का मूल है।

स्वामी जी ने सदाचार के गुणों को धारण करने के लिए वेदवाणी का अध्ययन करने और वेदानुसार जीवनयापन करने पर बल दिया है। कहां भी है 'वेदानां सर्वविद्या निधानं खलु।' अर्थात् वेद सभी विद्याओं के भण्डार है। वेद पढ़ना और उनका अनुसरण करना मनुष्य को सदाचारी तो बनाता ही है साथ ही इहलोक में यश, सम्मान तथा परलोक में सर्वोत्तम सुख प्राप्त होता है। वेद पढ़ने से हमें नैतिक-अनैतिक का ज्ञान होता है। करणीय और अकरणीय कर्त्तव्यों का ज्ञान होता है। सत् और असत् का भी ज्ञान होता है।

श्रुति स्मृत्युदितं धर्ममनुतिष्ठन् हि मानव:।
इह कीर्तिवाप्नोति प्रत्य चानुत्तमं सुखम्।।७।।८।।

सदाचार रहित मनुष्य को स्वामी जी ने नास्तिक कहा है क्योंकि जो मनुष्य वेदों का अध्ययन नहीं करता वह सदाचारी नहीं हो सकता जो वेद की निन्दा करता है वह सद्गुणी नहीं हो सकता। इसीलिए वेदनिन्दक को नास्तिक कहा गया है। ऐसे मनुष्य का बहिष्कार कर देना चाहिए।

योऽवनमन्येत ते मूले हेतुशास्त्राश्रयाद् द्विज:।।
स साधुभि बहष्किार्यो नास्तिको वेद निन्दक:।।६।।

अर्थात् जो कोई मनुष्य वेद और वेदानुकूल आप्तग्रन्थों का अपमान करे उसको श्रेष्ठ लोग जाति बाह्य कर दें। क्योंकि जो वेद की निन्दा करता है वहीं नास्तिक कहाता है।

स्वामी जी ने सदाचारी मानव के लिए संस्कारों से सुसंस्कृत होना अनिवार्य माना है। संस्कार विधि में उन्होंने 16 संस्कारों की बात कही है। संस्कारों से जीवन में अच्छे गुणों का संचार होता है। सद्गुणी व्यक्ति ही सदाचारी हो सकता है।

वैदिकै: कर्मभि: पुण्यैर्निषेकादिर्द्विजन्तुनाम्।।
कार्य्य: शरीर संस्कार: पावन प्रेत्य चेह च।।12।।

अर्थात् वेदोक्त पुण्यरूप कर्मों से ब्राह्मण, क्षत्रिय वैश्य अपने सन्तानों का निषेकादि संस्कार करें जो इस जन्म वा परजन्म में पवित्र करने वाला है।

स्वामी जी ने जीवन में सदाचार के मार्ग पर चलने के लिए 'संयम' का विशेष महत्त्व बताया है। संयम से ही मनुष्य अपने भटकाव को नियन्त्रण में ला सकता है। जिस प्रकार भटके हुए घोड़ों को सारथी रोक कर सन्मार्ग पर ले आता है। उसी प्रकार इन्द्रियों को नियन्त्रित करने के लिए 'संयम' द्वारा मनुष्य बुरे कर्मों से हटकर अच्छे कर्मों की ओर प्रेरित होता है।

इन्द्रियाणां विचरतां विषयेपहारिषु
संयमें यत्मातिष्ठेद्विद्वान यन्तेव वाजिनाम्।।१।।

मनुष्य का यही आचार है कि जो इन्द्रियां चित्र का हरण करने वाले विषयों से प्रवृत्त कराती हैं, उन्हें रोकने का प्रयत्न करे जैसे सारथी भटके हुए घोड़ों को रोककर सही (शुद्ध) मार्ग पर चलाता है।

इन्द्रियों को वश में करने वाला व्यक्ति समत्व भाव से जीवन जीता है। वह मान-अपमान निन्दा स्तुति, हानि लाभ, यश-अपयश सब

(शेष पृष्ठ 6 पर)

श्रेष्ठ समाज का निर्माण करता सामवेद

ले०-शिवनारायण उपाध्याय, 73 शास्त्री नगर दादाबाड़ी, कोटा

सामान्य रूप से सामवेद को ईश्वर स्तुति, प्रार्थना एवं उपासना का वेद माना जाता है और वैसा वह है भी, उसके 90 प्रतिशत से भी अधिक मंत्रों में इन्हीं विषयों पर विचार किया गया है परन्तु फिर भी प्रकारान्तर से उसमें समाज रचना, सृष्टि उत्पत्ति, राजनीति आदि अनेक विषयों पर विचार किया गया है। एक श्रेष्ठ समाज की रचना कैसे हो इस पर भी उसमें विचार हुआ है। इस लेख में हम यह बतलाने का प्रयत्न करेंगे कि सामवेद एक श्रेष्ठ समाज के निर्माण में किस प्रकार हमारा मार्गदर्शन कर रहा है। सामवेद का मानना है कि बिना ज्ञान के प्रचार-प्रसार के एक श्रेष्ठ समाज का निर्माण नहीं हो सकता है।

अचोदसो नो धन्वन्विन्दवः प्र स्वानासो बृहद्देवेषु हरयः।

वि चिदश्नाना इषयो अरातयोऽर्यो नः सन्तु सनिषन्तु नो धियाः।। साम. म. सं. 555

अर्थ-(अचोदसः) बिना किसी प्रेरणा के (नः) हमें (धन्वन्तु) पहुंचावे (इन्दवः) परम ऐश्वर्यशाली (प्र) उत्तम (स्वानासाः) उपदेश करने वाले (बृहद् देवेषु) महान् दिव्य गुणों में (हरयः) अज्ञान नाशक (विचित्) निर्गत (अश्नानाः) विषय वाले (इषयः) विषयेच्छा वाले (अरातयः) दुःखदायी (अर्यः) कामादि शत्रु (नः) हमारे (सन्तु) हों (सनिषन्तु) विभक्त हों (नः) हमारे (धियः) ज्ञान और कर्म।

भावार्थ-बिना किसी प्रेरणा के उपदेशक गण, अज्ञानान्धकार को नष्ट करने वाले तथा ऐश्वर्यवान् ज्ञानीजन हमें महान् दिव्य गुणों को प्राप्त करावे। हमारे दुःखदायी विषयेच्छा वाले काम क्रोध आदि शत्रु विषरहित हों, साथ ही हमारे ज्ञान और कर्म विभक्त हों।

ज्ञान के अभाव में कोई भी व्यक्ति विकास नहीं कर सकता है भी है अतः ज्ञानी महात्माओं का दायित्व है कि वे ज्ञान का प्रचार-प्रसार करें।

एह्यू षु ब्रवाणि ते ऽग्न इत्येतरा गिरः।

एभिर्वर्द्धासि इन्दुभिः।। साम. म. सं. 705

अर्थ-(एहि) आ (उ) वितर्क (सु) अच्छी तरह (ब्रवाणि) उपदेश करता हूँ (ते) तुझे (अग्ने) हे विद्यार्थी (इत्था) इस प्रकार (इतरा) वेद की (गिरः) वाणी का (एभिः) इन (वर्द्धासः) बढ़ता है (इन्दुभिः) ज्ञानों से।

भावार्थ-हे तेजस्वी विद्यार्थी तू आ। तुझे इन वेद की वाणियों का उपदेश करता हूँ। इन ज्ञानों से तू अपनी उन्नति कर।

ज्ञान प्राप्ति के लिए ब्रह्मचर्य धारण करना अत्यन्त आवश्यक है।

पुरोजिती वो अन्धसः सुताय मादयित्नवे।

अपश्वानं श्नथिष्ट न सखायो दीर्घजिह्वयम्।। साम. मं. सं. 697

अर्थ-(पुरोजिती) पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए (वः) तुम लोग (अन्धसः) अज्ञान पर (सुताय) विज्ञान बल के लिए (मादयित्नवे) आनन्द दायक (अप) दूर करना (श्वानं) कुत्ते के समान लम्पटता (श्नथिष्टन) नष्ट करो (सखायः) हे मित्रो। (दीर्घजिह्वय) लम्बी जिह्ववाली।

भावार्थ-हे मित्रों। तुम लोग अज्ञान पर पूर्ण विजय प्राप्त करने के लिए तथा विज्ञान बल की प्राप्ति के लिए लम्बी जिह्वा वाले कुत्ते के समान विषय भोग का परित्याग करो।

योग विद्या का आश्रय लेकर व्यक्ति को अच्छी तरह ज्ञान प्राप्त करना चाहिए।

प्र तु द्रव परि कोशं निषीद नृभिः पुनानो अभि वाजमर्ष।

अश्वं न त्वा वाजिन् मर्ज्जयन्तोऽच्छा बर्हीरशन-भिर्नयन्ति।। साम. मं. सं. 677

अर्थ-(प्र) प्रकर्ष (तु) शीघ्र (द्रव) जा (परि) हर प्रकार से (कोशं) आनन्दमय कोष को (निषीद) स्थिर हो (नृभिः) ज्ञानियों के द्वारा (पुनानः) पवित्र किया जाता हुआ (अभि) भली भांति (वाजम्) ज्ञान (अर्य) प्राप्त कर। (अश्वं न) घोड़े के समान (त्वा) तुझको (वाजिनम्) बलवान् (मर्ज्जयन्तः) शुद्ध करते हुए (अच्छा) अच्छी तरह (बर्हिः) परमात्मा का (राशनामिः) लगामों से (नयन्ति) प्राप्त करते हैं।

भावार्थ-हे जीव। तू शीघ्रता से आगे बढ़। आनन्द कोष में स्थित हो। ज्ञानियों के द्वारा पवित्र किया जाता हुआ तू ज्ञान को अच्छी तरह से प्राप्त कर। ज्ञानी जन तुझे परमात्मा के दर्शन कराने के लिए वैसे ही ले जाते हैं जैसे कि घोड़े की लगाम पकड़ कर उसे नहलाते के लिए ले जाते हैं।

भावार्थ-हे जीव। तू शीघ्रता से आगे बढ़। आनन्द कोष में स्थित हो। ज्ञानियों के द्वारा पवित्र किया जाता हुआ तू ज्ञान को अच्छी तरह से प्राप्त कर। ज्ञानी जन तुझे परमात्मा के दर्शन कराने के लिए वैसे ही ले जाते हैं जैसे कि घोड़े की लगाम पकड़ कर उसे नहलाते के लिए ले जाते हैं।

विवाह पूर्ण ज्ञान प्राप्ति के बाद ही स्वयंवर विधि से होवे।

अग्निं होतारं मन्ये दास्वन्तं वसोः सुनु। सहसो जातवेदस विप्रं नं जातवेदसं।

य ऊध्वया स्वध्वरो देवो देवाच्या कृपा। घृतस्य विभ्राष्टिमनु शुक्रशोचिष आजु ह्वनस्य सर्पिषः।। साम. मं. सं. 465

अर्थ-(अग्निम्) तेजस्वी (होतारम्) ग्रहण करने वाले (मन्ये) जानूं (दास्वन्तम्) दानि (वसोः) ब्रह्मचारी का (सुनुम्) पुत्र (सहसः) बलवान् का (जातवेदसम्) विद्या में प्रसिद्ध (विप्रम्) बुद्धिमान के (न) समान (जातवेदसम्) विषय को प्रकट करने वाले (यः) जो (ऊर्ध्वया) उत्तम विद्या से (स्वधरः) कल्याणकारी सुन्दर यज्ञ का अनुष्ठान करने वाले (देवः) मनोहर (देवाच्वा) दिव्य शक्ति देने वाली (कृपा) कृपा से (घृतस्य) घी के (विभ्राष्टिम्) विविध पदार्थों को पकाने वाली अग्नि के समान (अनु) पीछे कामना करे (शुक्रशोचिषः) शुद्ध दीप्ति वाला (आनुह्वानस्य) होम करने के योग्य (सर्पिषः) प्राप्त करने के लिए।

भावार्थ-हे कन्या। जो पुरूष उत्तम विद्या से कल्याणकारी यज्ञ करने वाला हो, विद्वानों को प्राप्त होने वाली ईश्वर की कृपा से मनोहर हो, जो होम के लिए प्राप्त करने योग्य शुद्ध पवित्र घी के साथ अनेक प्रकार के पदार्थों को पकाने वाली अग्नि के समान तेजस्वी हो, जो अग्नि के समान ग्रहण करने की योग्यता रखता हो, जो स्वयं दानी हो, जो बलवान वसु ब्रह्मचारी का पुत्र हो, जो प्रसिद्ध विद्वान् पुरूष के समान अपनी विद्या का भी प्रकट करने की क्षमता रखता हो, मैं ऐसे पुरूष को ही पति स्वीकार करती हूँ तू भी ऐसा ही कर।

विवाहित व्यक्ति को धनार्जन करने के लिए कोई कला सीखनी चाहिए।

मृज्यमानः सुहस्त्वा समुद्रे वाचमिन्वसि।

रयिं पिशङ्गं बहुलं पुरूस्पृहं पवमानाभ्यर्षसि।।

साम. मं. सं. 517

अर्थ-(मृज्यमानः) शुद्ध पवित्र हुआ (सुहस्त्या) हे हस्तकला मं निपुण (समुद्रे) आकाश में (वाचम्) वाणी को (इन्वसि) प्रेरित करता है (रयिम्) धन को (पिशंगम्) सुवर्ण (बहुलम्) बहुत (पुरूस्पृहम्) अत्यन्त चाहने योग्य (पवमान) ज्ञाता (अभ्यर्षसि) प्राप्त करता और कराता है।

भावार्थ-हे हस्तकला में निपुण पुरूष। शुद्ध पवित्र हुआ तू आकाश में शब्द को प्रेरित करता है। तू चाहने योग्य सुवर्ण आदि धन को प्राप्त करता और कराता है।

परिवार को ठीक से चलाने के लिए स्त्री का गुणवान् होना आवश्यक है।

महे नो अद्य बोधयोषो राये दिवित्मती।

यथा चिन्नो अबोधय सत्यश्रवसि वाय्ये सुजाते अश्वसूनृते।। साम. मं. सं. 421

अर्थ-(महे) बड़ी (नः) हमें (अद्य) आज भी (बोधय) जगाती है (उषा, उ) उषादेवी (राये) सम्पत्ति का अर्जन करने के लिए (दिवित्मती) प्रकाशवाली (यथा चित्) जैसे ही (नः) हमें (अबोधयः) सृष्टि के प्रारम्भ से जगती आई है वैसे ही (सत्यश्रवसि) सत्य विद्या और कीर्ति के निमित (वाय्ये) तन्तु के समान सन्तति का विस्तार करने वाली स्त्री। (सुजाते) सुन्दर कुल में उत्पन्न (अश्वसूनृते) सत्य और प्रिय बोलने वाली।

भावार्थ-हे श्रेष्ठ गुणवाली। धागे के समान सन्तति का विस्तार करने वाली स्त्री। सत्य और मधुर बोलने वाली कुलीन स्त्री। मनुष्य जैसे चमकती हुई देवी के उदय होने पर धन के उपार्जन के लिए अपने-अपने कामों में लग जाते हैं, ऐसे ही आज तू हमें भी सम्पत्ति, विद्या तथा सच्ची कीर्ति के लिए ज्ञान का प्रकाश दे।

धनार्जन श्रेष्ठ नीति से ही प्राप्त किया जाना चाहिए।

आ नो अग्ने वयो वृधं रयिं पावक शस्यम्।

रास्वा च न उपमाते पुरूस्पृहं सुनीति सुयशस्तरम्।।

साम. म. सं. 43

(शेष पृष्ठ 7 पर)

पृष्ठ 2 का शेष-राजा सब दिशाओं...

लिए योग्य समझे। तेरे उत्तम गुणों के कारण केवल और केवल तेरा ही चुनाव करे। अपना विश्वास प्रजा के प्रति स्थापित करते हुए तुझे सदा सत्य को ही अपना साधन बनाना होगा। झूठ को भी प्रजा पसंद नहीं करती। एक बार प्रजा ने तुझे ठुकरा दिया तो फिर प्रजा कभी भी तुझ पर विश्वास नहीं करेगी तथा तू फिर कभी भी शासक नहीं बन सकेगा। इसलिए तेरे लिए यह आवश्यक है कि प्रजा में अपना विश्वास पैदा करने के लिए सदा सत्य बोल, झूठ मत बोल, प्रजा से सदा प्रेम बनाए रख, सदा प्रजा के हित की ही सोच, प्रजा के कल्याण की योजनाए बना कर उन योजनाओं को आगे बढ़ाता है तथा सदा प्रजा की रक्षा करने की शक्ति अपने में बनाता है। मन्त्र आगे कहता है कि तेरे राज्य में पांच दिशाएं है। भाव यह है कि जितनी भी दिशाओं में कोई भी नागरिक निवास कर रहा है, वह सब के सब नागरिक चाहे वह किसी भी दिशा के निवासी हों, सब के सब नागरिक तेरे पक्ष में ही अपना मतदान करें तुझ को ही अपने शासक स्वरूप नेता चुनकर तेरा राज्याभिषेक करें, तुझे अपना शासक स्वीकार करें।

इस प्रकार तुझे अपना शासक स्वीकार करते हुए प्रजा यह कहे कि हमने तुझे इसलिए अपना शासक चुना है क्योंकि तेरे में अतुलित गुण हैं, तू प्रजा की रक्षा करने की शक्ति रखता है, तू प्रजा से अपने पुत्रों के समान, अपनी संतान के समान प्रेम करता है, अपना पूरा समय तू जनहित में ही लगाता है, उत्तम शिक्षक के समान तू अपनी प्रजा के लिए उत्तम शिक्षा की व्यवस्था करने में सक्षम है। प्रजा के हितों की रक्षा के समय तू अपने अहित की भी चिंता नहीं करता। इसलिए हम प्रजा के लोग राष्ट्र के यश के लिए, राष्ट्र के हित के लिए, राष्ट्र के कल्याण के लिए राष्ट्र की रक्षा के लिए, राष्ट्र के धन ऐश्वर्य को बढ़ाने के लिए, राष्ट्र के इस सर्वोच्च स्थान पर तुझे नियुक्त करते हैं, स्वीकार करते हैं। तू इस स्थान को ग्रहण कर तथा उग्र, तेजस्वी बन कर हम सब की रक्षा करते हुए, हम सब की प्रगति के उपाय करते हुए, हम सब के लिए धन ऐश्वर्यों को बढ़ाकर यश प्राप्त कर।

छात्र-छात्राओं को स्कूल किट वितरित किये

आर्य समाज जिला कोटा ने सेवा कार्यों के तहत विगत दिनों कैथून क्षेत्र में बाडी भीमपुरा स्थित राजकीय प्राथमिक विद्यालय में विद्यार्थियों को स्कूल किट वितरित किये। स्कूल बैग, पैन व पैंसिल आदि के स्कूल किट पाकर छात्र छात्राओं के चेहरे खिल उठे। वहां उपस्थित अभिभावकों ने भी प्रसन्नता व्यक्त की। विद्यालय में आयोजित कार्यक्रम में आर्य समाज के प्रधान अर्जुन देव ने वहां उपस्थित विद्यार्थियों को सम्बोधित करते हुये कहा कि गांव के इस विद्यालय में शिक्षा ग्रहण करें व अपने गांव के विकास में भरपूर योगदान देकर अपने क्षेत्र को सम्पन्न बनाएं। उन्होंने अभिभावकों को कहा कि अधिक से अधिक बच्चे जो शिक्षा से वंचित रह रहे हैं उन्हें शिक्षा से जोड़ने का प्रयास करें। इस अवसर पर बच्चों ने राष्ट्र भक्ति से ओत प्रोत गाने सुनाए। अंत में विद्यालय की प्रधानाध्यापिका श्रीमती कनक लता सोनी ने आर्य समाज का आभार व्यक्त किया।

आर्य मर्यादा के ग्राहक महानुभावों की सेवा में

आर्य मर्यादा साप्ताहिक निरन्तर आपकी सेवा में पहुंच रही है। जिन आर्य मर्यादा के ग्राहकों ने अभी तक अपना वार्षिक शुल्क या पिछला शुल्क नहीं भेजा है उनसे विनम्र प्रार्थना है कि वह अपना वार्षिक शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। आर्य मर्यादा का वार्षिक शुल्क मात्र 100/- रुपये है और आजीवन सदस्यता शुल्क 1000/- रुपये है। इसलिये मेरी सभी ग्राहक महानुभावों से प्रार्थना है कि वह अपना शुल्क जल्द से जल्द भिजवाने की व्यवस्था करें। इसके साथ ही आर्य समाजों के पदाधिकारियों एवं सदस्यों से भी निवेदन है कि वह अधिक से अधिक आर्य मर्यादा के ग्राहक बनाने में सहयोग करें। आशा है आप का सहयोग हमें प्राप्त होगा।

-व्यवस्थापक आर्य मर्यादा

वधू चाहिये

गुडगांव (हरियाणा) में खत्री कपूर मंगलीक लड़का, उम्र लगभग साढ़े 28 साल, कद पांच फुट 6 ईंच प्राइवेट कम्पनी में सर्विस, पैकेज लगभग 16 लाख रुपये के लिये पढ़ी लिखी, सुन्दर मंगलीक कन्या चाहिये। व्हाट्सएप्प पर पूरी जानकारी, लड़की की फोटो सहित ब्यौरा भेजें। **मोबाइल नम्बर 94173-30786**

पृष्ठ 4 का शेष-'सत्यार्थ प्रकाश' में सदाचार...

स्थितियों में समान रूप से स्थिर रहता है। गीता में भगवान श्री कृष्ण भी यही कहते हैं।

दुःखेष्वनुद्विग्नमनाः सुखेषु विगतस्पृहः

वीतरागभय क्रोधः स्थितधी-र्मुनि उच्यते।।2/56।।

तानि सर्वाणि संयम्य युक्त आसीत मत्परः

वरो हि यस्येन्द्रियाणि सत्य प्रज्ञा प्रतिष्ठिता श्रीमद्-भगवतद्गीता 2/61

जो मनुष्य सत्य भाषाणादि कर्मों का आचरण करता है वहीं सदाचारी है। मनुस्मृति के अनुसार इसे परमधर्म कहा गया है। आचारः परमोधर्मः श्रुत्युक्तः स्मार्त्त एव च।।

जिस कर्म में लोकोपकार की भावना हो वही कर्म करना श्रेयस्कर है। हानिकारक कर्मों का परित्याग ही मनुष्य का मुख्य कर्त्तव्य है। सत्यार्थ प्रकाश में कहा गया है कि सदाचारी मनुष्य कभी भी नास्तिक अर्थात् वेद निन्दक, लम्पट, विश्वासघाती, चोर, मिथ्याकारी, स्वार्थी, कपटी, छली आदि दुष्ट मनुष्यों की सेवा न करे। आप्त (महान्) महापुरुषों जो सत्यवादी धर्मात्मा, परोपकारी और प्रियजन है उनका सदा संग करना ही श्रेष्ठाचार अथवा सदाचार है। यहां स्वामी जी ने सदाचार को ही श्रेष्ठाचार कहा है। आर्य का अर्थ भी श्रेष्ठ होता है। श्रेष्ठ आर्य पुरुष जैसा व्यवहार करता है उसे श्रेष्ठाचार कहा गया है। अतः आर्य से श्रेष्ठाचार ही अपेक्षित है। आर्य को सदा सदाचारी होना ही चाहिए। सरल शब्दों में आर्य वह है जो श्रेष्ठ आचरण करता है और वेद के बताए मार्ग पर चलता है।

सदाचारी मनुष्य का लक्षण बताते हुए स्वामी जी ने उसे विद्या ग्रहण करने वाला धर्म के मार्ग पर चलने वाला, वैर न रखने वाला और मधुरभाषी होना बताया है। सत्य बोलने से ही धर्म की वृद्धि और अधर्म का नाश होता है।

अहिंसयैव भूतानां कार्यं श्रेयोऽनुशासनम्

वाक् चैव मधुराश्लक्ष्णा प्रयोज्या धर्ममिच्छता।।14।।

अर्थात् विद्या पढ़, विद्वान धर्मात्मा होकर, निरवैरता से सब प्राणियों के कल्याण का उपदेश करे और उपदेश में वाणी मधुर और कोमल बोले। जो मनुष्य अपने सत्योपदेश से धर्म की वृद्धि और अधर्म का नाश करते है वे पुरुष धन्य है।

इस प्रकार हम देखते है कि सत्यार्थ प्रकाश के 'दशमें समुल्लास' में स्वामी दयानन्द जी ने सदाचार और सदाचारी मनुष्य के लक्षण बताए है। उन्होंने वेदविद्या अध्ययन, सत्संगति, संस्कार, इन्द्रिय निग्रह सत्य भाषण, परोपकार, निरवैरता धर्म में आस्था आदि गुणों को सदाचारी मनुष्य के लिए अनिवार्य बताया है। आज की भावी पीढ़ी कदाचार और दुराचार के मार्ग पर चल पड़ी है। इसका कारण यह है कि हम उन्हें सदाचार का पाठ नहीं पढ़ा पा रहे है।

'सत्यार्थ प्रकाश' जैसे अमूल्य ग्रन्थों के बारे में हमने उन्हें बताया ही नहीं। हमने उन्हें जीवन का सही मार्ग बताने वाले ग्रन्थों को पढ़ने की प्रेरणा ही नहीं दी। अच्छे संस्कार नहीं दे सके। इसीलिए समाज में भ्रष्टाचार बढ़ रहा है और सदाचार का ह्रास हो रहा। अतः हमें अपनी भावी पीढ़ी को सद्गुणों से अलंकृत कर उन्हें सदाचारी बनाना होगा। बच्चों को संस्कारयुक्त बना कर उन्हें आदर्श मानव और सुसंस्कृत नागरिक बनाना है। हमें स्वयं 'सत्यार्थ प्रकाश' में वर्णित स्वामी दयानन्द जी के अमूल्य सन्देश को समझना होगा और अपने बच्चों को भी समझना होगा। इससे समाज में सदाचार का मार्ग प्रशस्त होगा। देश और समाज का भी उद्धार होगा। मानव समाज का उत्थान होगा।

पृष्ठ 5 का शेष-श्रेष्ठ समाज का निर्माण...

अर्थ-(आ) भली भांति (नः) हमें (अग्ने) हे परमेश्वर। (वयोवृधं) आयु को बढ़ाने वाला (रयिम्) धन को (पावक) हे पतित पावन (शंस्यम्) प्रशंसनीय (रास्वा) दे (च) और (नः) हमारी (उपमाते) हे सृष्टि कर्ता (पुरूस्पृहम्) बहुतों के चाहने योग्य (सुनीति) अच्छी नीति से प्राप्त होने वाले (सुयशस्तरम्) यश का विस्तार करने वाले।

भावार्थ-हे सृष्टि कर्ता, पतित पावन परमेश्वर। तू हमें अच्छी नीति से प्राप्त होने वाले, आयु वर्धक, प्रशंसा के योग्य यश वर्धन धन दे।

श्रेष्ठ मनुष्य के मन में गन्दे विचार उत्पन्न नहीं होते हैं।

सनादग्ने मृणसि यातुधानान् न त्वा रक्षांसि पृतनासुजिग्युः।

अनु दह सहमूरान् कयादो माते हेत्या सुक्षत दैव्यायाः।।

साम. म. सं. 80

अर्थ-हे परमेश्वर। तू सदैव राक्षसी विचारों को दूर करता है। तुझे बुरे विचार वाले लोगों को अपनी दिव्य नीति से दण्ड दे।

श्रेष्ठ समाज में लोग दुष्ट लोगों से दूर ही रहते हैं।

अपत्यं वृजिन रिपुं स्तेनमग्ने दुराध्यम्।

दविष्टमस्य सत्पते कृधी सुगम्।। साम. म. सं. 105

अर्थ-(अप) दूर कर (त्यम्) उस (वृजिनम्) पापी को (रिपुम्) शत्रु (स्तेनम्) चोर (दुराध्यम्) दुःख दायीं (दविष्ठम्) दूर (अस्य) भगा (सत्पते) हे सज्जनों के पालक (कृधी) कर (सुगम्) उत्तम मार्ग पर चलने वाला।

भावार्थ-हे सज्जनों के पालक परमेश्वर। पानी, चोर और दुःख दायी लोगों को हमसे दूर कर। सभी को उत्तम मार्ग पर चलने वाला बना।

समाज में सभी निरोग रहें। अहिंसा का पालन करें।

अपामीवामप सिधमप सेधत दुर्मतिम्।

आदित्यासो युयोतना नो अंहसः।। साम. म. सं. 397

अर्थ-(अप) दूर करो। (अमीवाम्) रोग को (अप) दूर करो (सिधम्) हिंसा आदि अनर्थ करने वाले का (अप) दूर (सेधत) करो (दुर्मतिम्) दुर्बुद्धि पुरूष को (आदित्यासः) हे आदित्य ब्रह्मचारियों। (युयोतन) दूर करो (नः) हमें (अंहसः) पाप से।

भावार्थ-हमारे समाज में न कोई रोगी रहे, न हिंसक रहे, न दुर्बुद्धि पुरूष रहे। समाज में आदित्य ब्रह्मचारी (48 वर्ष की आयु तक शास्त्रों का अध्ययन करने वाले) अपने उपदेश हमें सभी पापों से दूर रखें।

समाज में पशु पालन पर विशेष ध्यान दिया जावे।

तं वो दस्ममृतीषहं वसोर्मन्दा- नमन्धसः।

अभि वत्सं न स्वसरेषु धेनव इन्द्रं गोभिर्नवामहे।। साम. म. सं. 236

भावार्थ-हे मनुष्यों! गौशालाओं में बछड़े को गाय के समान हम तुम्हारे दुःख निवारक तथा अन्नादि से आनन्दित करने वाले कामादि शत्रुओं के नाशक परमात्मा की वेद वाणियों से स्तुति करते हैं।

समाज में सब मिलकर रहें और सत्याचरण को महत्व दें।

मा चिदन्यद्वि शंसत सखायो मा रिषण्यत्।

इन्द्रमित्स्तोता वृषणं सचा सुते मुहुरूक्थ च शंसत।।

साम. मं. सं. 242

अर्थ-(मा चित्) नहीं ही (अन्यत्) सत्य को विपरीत (विशंसत) उच्चारण करो। (सखायः) हे मित्रों। (मा रिषण्यत्) हिंसा मत करो। (इन्द्रमित्) ईश्वर की ही (स्तोता) स्तुति करो। (वृषणम्) कामनाओं को पूर्ण करने वाले (सचा) एक साथ (सुते) जगत् में (मुहुः) बार-बार (उक्था) वेद मंत्रों (च) और (शंसत) पाठ करो।

समाज के अन्दर ऐसा वातावरण बनाएं कि कोई भी व्यक्ति, किसी भी समय, कहीं पर भी जाने में भय अनुभव न करे।

गावश्चिद्धा समन्वय सजात्येन मरूतः सम्बन्धवः।

रिहते ककुमो मिथः।।

साम. मं. सं. 404

अर्थ-(गावः) ऋत्विक् लोग (चिद् ध) निश्चय ही (समन्वयः) एक समान तेजस्वी (सजात्येन) समान जन्म द्वारा (मरूतः) मनुष्य मात्र (स बन्धवः) समान बन्धु (रिहते) विचारते है। (ककुभः) दिशाओं में (मिथः) परस्पर।

समाज में कार्य को महत्ता दी जानी चाहिए।

शं पदं रयीषिणे न काममव्रतो हिनोति न स्पृशद्रयिम्।।

साम. म. सं. 441

अर्थ-कल्याणकारक स्थान, धन चाहने वाले संयमी पुरूष के लिए है। कर्म हीन व्यक्ति की न कोई कामना पूर्ण होती है और न प्रतिष्ठा प्राप्त होती है। श्रेष्ठ समाज में एक ईश्वर का ही पूजन किया जाता है।

अभित्यं देवं सवितार मोण्योः कविक्रतुमर्चामि सत्य सवँरत्न धामभि प्रियं मतिम्।

ऊर्ध्वा यस्यामतिर्भा अविद्युतत्सवीमनिहिरण्यपाणिरमिमति सुक्रतुः कृपा स्वः।।

साम. मं. सं. 464

अर्थ-(अभि) सब ओर से (त्यम्) उस (देवम्) दान आदि गुणों वाले (सवितारम्) संसार के उत्पादक (अण्योः) द्युलोक और पृथ्वी लोक के अन्दर (कवि क्रतुम्) बुद्धि पूर्वक जिसके सब काम हैं (अर्चामि) पूजा करता हूँ (सत्य सवम्) सत्य ज्ञान वाले (रत्नधाम्) सम्पूर्ण रत्नों को धारण करने वाले (अभिप्रियम्) सबके प्रिय (मतिम्) मनन करने योग्य (ऊर्ध्वा) अन्दर ऊपर, नीचे सब तरफ (यस्य) जिसका (अमतिः) सबसे श्रेष्ठ (भाः) प्रकाश (ऊर्ध्वाः) अन्दर (अविद्युतत्) चमकता है (सवीमनि) आज्ञा में (हिरण्यपाणिः) सुवर्ण हाथ में प्राप्त के समान (अमिमीत) बनाया है (सुक्रतुः) सुन्दर ज्ञान वाले की (कृपा) कृपा से (स्वः) अपनी।

श्रेष्ठ समाज में व्यक्ति सौ वर्ष की आयु तक प्रसन्नता से जीवित रहता है।

अया वाजं देवहितं सनेम मदेमशतहिमाः सुवीराः।।

साम. म. सं. 454

अर्थ-(अया) इस स्तुति, प्रार्थना और उपासना के द्वारा (वाजं) अन्न और बल को (देवहितम्) परमेश्वर को दिए हुए (सनेम) प्राप्त करें। (मदेम) प्रसन्न रहे (शतहिमाः) सौ वर्ष की आयु तक (सुवीराः) और सुशिक्षति पुत्र और पौत्रों से संयुक्त होकर।

श्रेष्ठ समाज में प्रतिदिन प्रातः सायं यज्ञ होता है।

देवो वो द्रविणोदाः पूर्णा विवष्ट्वा रिसचम्।

उद्वा सिञ्चध्वमुप वा पृणध्वमादिद्वो देव ओहते।।

साम. म. सं. 55

भावार्थ-हे मनुष्यों। धनदाता, परमेश्वर चाहता है कि तुम्हारी स्रुवा घी से पूर्ण रहा करे अर्थात् यज्ञ होता रहे तो तुम्हारी उन्नति होगी समाज में श्रेष्ठ व्यक्तियों का सम्मान भी होना चाहिए।

आयाह्ययमिन्दवेऽश्वपते गोपत उर्वरापते। सोमं सोमपतेपिब।।

साम. मं. सं. 402

भावार्थ-हे घोड़े आदि पशुओं के स्वामी। हे गौ आदि उपकारी जीवों के स्वामी हे उपज से भरपूर भूमि के अधिष्ठाता पुरूष। तेरे लिए यह सोम रस सुरक्षित है आ तू इसका पान कर।

श्रेष्ठ समाज तभी बन पाता है जब शासन व्यवस्था भी ठीक हो। इस विषय में मंत्र संख्या 314 में उल्लेख है कि हे राष्ट्रपति। तू सहायक मनुष्यों के साथ उस मंच पर विराजमान हो तो तेरे लिए हमने बनाया है और जिस प्रकार से हमारी रक्षा और उन्नति कर सके वह कर।

आर्य समाज सन्नौर में योग शिविर

आर्य समाज सन्नौर में 20 एवं 21 जून 2018 को योग शिविर का आयोजन किया गया। यह शिविर अंतर्राष्ट्रीय योग दिवस के उपलक्ष्य में स्वामी रामदेव जी के पावन आशीर्वाद से स्वाभिमान ट्रस्ट एवं पतंजलि योग समिति के सहयोग से आर्य समाज सन्नौर के प्रांगण में लगाया गया। यह शिविर पूर्णतया निशुल्क था जिसमें आठ वर्ष से लेकर अस्सी वर्ष तक के लोगों ने भाग लिया। यह शिविर आचार्य विजेन्द्र शास्त्री जी, समिति के मंडल प्रभारी तथा नीरज गुप्ता जी के निजी प्रयासों से सम्भव हुआ। प्रशिक्षण श्री कुलविन्द्र जी द्वारा दिया गया। शिविर का प्रबन्ध आर्य समाज के प्रधान श्री राजेन्द्र वर्मा जी, मंत्री श्री सतीश बदरू जी, नरेश भाटिया जी, डाक्टर शंकर दास, प्यारा लाल, रविन्द्र खन्ना तथा अनिल बदरू ने किया। श्री किशन सिंह डायरैक्टर हाउस फैड पंजाब तथा चेयरमैन मल्टीपर्पज को आप्रेटिव सोसायटी सन्नौर ने मुख्य मेहमान के रूप में भाग लिया। उन्होंने अपने भाषण में कहा कि योग हर उम्र के लोगों को करना चाहिये क्योंकि योग हमें बिना दवाइयों के कई बीमारियों से बचाता है। मुख्य मेहमान तथा प्रशिक्षक कुलविन्द जी को पतंजलि चिन्ह, सरोपा तथा पुष्पमालाओं से सम्मानित किया गया। यज्ञ के साथ शिविर सम्पन्न हुआ। अन्त में आर्य समाज सन्नौर के प्रधान श्री राजेन्द्र वर्मा ने सब का धन्यवाद किया।

सतीश बदरू
मंत्री-आर्य समाज

श्री अश्विनी मोंगा आर्य समाज चौक बठिंडा के प्रधान बने

आर्य समाज, आर्य समाज चौंक बठिंडा का चुनाव दिनांक 17 जून 2018 को आर्य समाज के प्रांगण में आरम्भ हुआ जिसमें श्री अश्विनी मोंगा जी को आर्य समाज, आर्य समाज चौक बठिंडा का प्रधान सर्वसम्मति से बनाया गया। सर्वप्रथम आर्य समाज के सभी सभासदों ने हवन यज्ञ किया। उसके पश्चात आर्य समाज के चुनाव की कार्यवाही आरम्भ हुई। श्री दविन्द्र बांसल ने चुनाव पर्यवेक्षक के तौर पर श्री प्रेम चंद गोयल का नाम पेश किया जिसे सभी ने सर्वसम्मति से चुनाव अधिकारी के तौर पर मान लिया। तत्पश्चात आर्य समाज चौक बठिंडा के चुनाव की कार्यवाही आरम्भ हुई। चुनाव अधिकारी श्री प्रेम चंद गोयल ने प्रधान पद के लिये नाम प्रस्तुत करने के लिये कहा। श्री सुरिन्द्र कुमार गर्ग ने प्रधान पद के लिये श्री अश्विनी मोंगा का नाम प्रस्तुत किया जिसका अनुमोदन श्री गौरी शंकर, श्री जनेश सिंगला एवं डाक्टर ठुकराल ने किया। चुनाव अधिकारी ने किसी भी दूसरे नाम के बारे में पूछा परन्तु किसी भी सदस्य ने अन्य कोई नाम पेश नहीं किया। लिहाजा चुनाव अधिकारी ने श्री अश्विनी मोंगा जी को आर्य समाज, आर्य समाज चौक बठिंडा का निर्विरोध प्रधान घोषित कर दिया। जिसका वहां उपस्थिति सभी सदस्यों ने तालियों के साथ खड़े होकर अपनी स्वीकृति दी और स्वागत किया। कुल 94 सभासदों में से 82 सभासद मौजूद थे। सभी सभासदों ने प्रधान जी को अपनी कार्यकारिणी बनाने का अधिकार दिया। जिसके पश्चात प्रधान श्री अश्विनी मोंगा जी ने अपनी तीन पदाधिकारियों के नामों की घोषणा की। सर्वप्रथम श्री सुरिन्द कुमार गर्ग को महामंत्री, श्री दविन्द्र बांसल जी को कोषाध्यक्ष और डाक्टर शाम लाल ठुकराल को प्रैस सचिव मनोनीत किया। श्री अश्विनी मोंगा जी ने आश्वासन दिया कि वह आर्य समाज के कार्यों को गति प्रदान करेंगे। तत्पश्चात प्रधान जी ने सभी सभासदों का धन्यवाद किया।

आर्य समाज, आर्य समाज चौक बठिंडा के नव निर्वाचित प्रधान श्री अश्विनी मोंगा जी आर्य समाज के सभासदों के साथ सामूहिक चित्र खिंचवाते हुये।

आर्य समाज मंदिर मेहरपुरा अमृतसर में शरारती तत्वों द्वारा तोड़फोड़

आर्य समाज मंदिर मेहरपुरा अमृतसर पिछले लगभग 50 वर्षों से वेद प्रचार का कार्य आसपास के क्षेत्रों में शान्तिपूर्ण ढंग से कर रहा है। पिछले दिनों आर्य समाज मंदिर मेहरपुरा अमृतसर में कुछ शरारती तत्वों ने घुस कर आर्य समाज मंदिर में तोड़-फोड़ की और आर्य समाज के भवन पर कब्जा करने का प्रयास किया। दिनांक 17-18 जून 2018 की मध्य रात्रि को कुछ शरारती तत्वों ने आर्य समाज मेहरपुरा अमृतसर का ताला तोड़ कर इस भवन में लगी आर्य समाज के महापुरुषों की तस्वीरों की बेअदबी की और हवन कुंड़ को तोड़ दिया। इससे स्थानीय आर्य समाजियों में बेहद रोष पाया जा रहा है। आर्य समाज एक शान्ति प्रिय और कानून व्यवस्था को मानने वाली एक धार्मिक एवं सामाजिक संस्था है। आर्य समाज की सुरक्षा के लिये पिछले दिनों स्थानीय आर्य समाजियों का एक शिष्टमंडल पंजाब पुलिस आयुक्त अमृतसर से मिला और इन शरारती तत्वों के विरूद्ध कानूनी कार्यवाही करने का आग्रह किया। जिला पुलिस आयुक्त ने इस शिष्टमंडल को आश्वासन दिया कि वह इन शरारती तत्वों पर बनती कानूनी कार्यवाही करेंगे। इस शिष्टमंडल में आर्य समाज शक्ति नगर अमृतसर के महामंत्री श्री राकेश मेहरा जी, आर्य समाज लक्ष्मणसर अमृतसर के प्रधान श्री इन्द्रपाल आर्य जी, आर्य समाज पुतलीघर अमृतसर के प्रधान श्री ठुकराल जी, श्री देशबन्धु जी, आर्य समाज नवांकोट अमृतसर से श्री बालकृष्ण एडवोकेट जी थे। श्री राकेश मेहरा जी ने बताया कि आर्य समाज के संस्थापक, समाज सुधारक, नारी उत्थान, क्रान्तिकारी तथा स्वतंत्रता संग्राम के प्रेरक महर्षि दयानन्द सरस्वती ने देश के लिये बहुत से कार्य किये हैं। इसलिये आर्य समाज में महापुरुषों की बेअदबी करने वाले शरारती तत्वों पर पुलिस उचित कार्यवाही कर आर्य जगत के आक्रोश को शान्त करने का प्रयास करें।

पुलिस आयुक्त अमृतसर से मिलने के लिये जाता हुआ आर्य जनों का एक शिष्टमंडल।

राकेश मेहरा
महामंत्री

आर्य मर्यादा साप्ताहिक में विज्ञापन देकर लाभ उठाएं।

श्री प्रेम भारद्वाज महामन्त्री, सम्पादक, प्रकाशक, मुद्रक द्वारा गायत्री प्रिंटिंग प्रैस, मण्डी रोड जालन्धर से मुद्रित होकर आर्य मर्यादा कार्यालय, गुरुदत्त भवन, चौक किशनपुरा, जालन्धर से इसकी स्वामिनी आर्य प्रतिनिधि सभा पंजाब के लिए प्रकाशित हुआ। E-mail: apspunjab2010@gmail.com, www.aryapratinidhisabha.org
आर्य मर्यादा में प्रकाशित सारी लेखन सामग्री से सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं। प्रत्येक विवाद के लिए न्याय क्षेत्र जालन्धर होगा।